कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



कृषि समाज और मुग़ल साम्राज्य

- सोलहवीं-सत्रहवीं सदी के दौरान हिंदुस्तान में करीब-करीब 85 फ़ीसदी लोग गाँवों में रहते थे।
- छोटे खेतिहर और भूमिहर संभ्रांत दोनों ही कृषि उत्पादन से जुड़े थे और दोनों ही फ़सल के हिस्सों के दावेदार थे।
- इससे उनके बीच सहयोग, प्रतियोगिता और संघर्ष के रिश्ते बने।
- खेती से जुड़े इन तमाम रिश्तों के ताने-बाने से गाँव का समाज बनता था।
- इस ग्रामीण समुदाय के तीन घटक थे-

1. खेतिहर किसान
2. पंचायत
3. गाँव का मुखिया (मुकद्दम या मंडल)

- इसी समय कई बाहरी ताकतें भी ग्रामीण दुनिया में दाखिल हुईं। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण मुग़ल राज्य था जो अपनी आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा कृषि उत्पादन से उगाहता था।
- राज्य के नुमाइंदे - राजस्व निर्धारित करने वाले, राजस्व वसूली करने वाले, हिसाब रखने वाले - ग्रामीण समाज पर काबू रखने की कोशिश करते थे।
- वे तसल्ली करना चाहते थे कि खेतों की जुताई हो और राज्य को उपज से अपने हिस्से का कर समय पर मिल जाए।
- चूँकि कई फ़सलें बिक्री के लिए उगाई जाती थीं, इसलिए व्यापार, मुद्रा और बाज़ार भी गाँवों में घुस आए और इससे खेती वाले इलाके शहर से जुड़ गए।
- किसान और कृषि उत्पादन
- सिंचाई और तकनीक
- पंचायतें और मुखिया- जातिगत पंचायतें
- ग्रामीण दस्तकार
- कृषि समाज में महिलाएँ

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- जंगल और कबीलें :- जंगलों में घुसपैठ
- जमींदार
- भू-राजस्व प्रणाली
- चाँदी का बहाव
- स्त्रोत - अबुल फज्ल की आइन-ए-अकबरी।



Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here